रविवारीय

दिनेश गुप्ता

इस मामले में कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने भी प्रतिक्रिया दी है और कहा कि सिस्टम से पक गई लड़की . उन्होंने फोगाट की एक तस्वीर भी साझा की है . थरूर ने लिखा, इस सिस्टम से पक गई है ये लड़की . लड़ते-लड़ते थक गई है ये लड़की . साथ ही उन्होंने लिखा, सॉरी विनेश . कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने भी फोगाट को लेकर एक्स पर संदेश दिया था .प्रियंका गांधी ने कहा, तमाम चुनौतियों से लड़ते हुए अपनी अथक मेहनत से आप जिस मुकाम तक पहुंचीं वो आसान नहीं था . आपकी इस अविश्वसनीय यात्रा से करोड़ों सपनों को बल मिला है . इस मुश्किल समय में करोड़ों देशवासी उसी उत्साह के साथ आपके साथ खड़े हैं, जैसा पूरे कंप्टीशन के दौरान थे . मेरी बहन, खुद को अकेले मत समझना और याद रखना कि आप हमारी चैम्पियन थीं और आप हमेशा हमारी चैम्पियन रहेंगी . मुझे पूरा भरोसा है कि आप और यादा मजबूत तरीके से वापसी करेंगी .

फोगाट पर राजनीति हरियाणा चुनाव में लाभ दिला पाएगी?

खेल के नियम होते हैं,लेकिन राजनीति बिना नियमों के चलती है. नैतिकता की भी कोई जगह राजनीति में नहीं होती. राजनीति करने वालों के लिए बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना का भारत आना और विनेश फोगाट का फाइनल मुकाबले से बाहर हो जाना एक समान ही है. बांग्लादेश को लेकर भारत की नीति और सौ ग्राम अधिक वजन पर कई नेताओं के बयान पर सिर्फ तरस खाया जा सकता है. विनेश फोगाट को फायनल मुकाबले से अयोग्य घोषित किए जाने का निर्णय पूरे देश के लिए हतप्रभ करने वाला रहा. सौ ग्राम वजन अधिक होने के आधार पर विनेश फोगाट को अयोग्य करार दिए जाने का निर्णय साजिश लगना स्वभाविक है. पेरिस ओलंपिक चयन ट्रायल को लेकर भी खूब बवाल हुआ.

पहलवान अंतिम पंघाल के सिलेक्शन के चलते विनेश को अपनी मूल वेट कैटेगरी 53 किलोग्राम छोड़नी पड़ी और वेट घटाकर 50 किलोग्राम कैटेगरी में आ गईं. फैसले के बाद पूरे देश में चर्चा का सिर्फ विनेश फोगाट पर ही चर्चा हो रही थी. सोशल मीडिया पर कुछ लोग इस पूरे मामले को सरकार की साजिश बताने लगे, तो कोई लिख रहा है फोगाट सिस्टम के आगे हार गई. जिन लोगों को ओलंपिक के नियमों के बारे में नहीं जानते है, वह भी इस मामले पर ज्ञान दे रहे थे. ये लोग हर घटना को सियासी बनाने में माहिर हैं. ऐसे लोगों को सोचना चाहिए कि ये मुद्दा देश का अंदरूनी मामला नहीं है. ओलंपिक दुनिया का एक बड़ा खेल इवेंट है. खिलाड़ियों के लिए ये इवेंट करो या मरो जैसा होता है. मगर जब भारत के अंदर से ही प्रधानमंत्री और कुश्ती संघ को फोगाट मामले से जोड़ा जाए तो इसका दुनिया में क्या संदेश जाएगा. सचाई पेरिस में बैठी भारतीय ओलंपिक संघ की पूरी टीम जानती थी. पूरी टीम इस बात की कोशिश करती रही कि विनेश का वजन किसी भी तरह पचास किलोग्राम से नीचे आ जाए. बाल तक काटे गए. जाहिर है कि विनेश के खिलाफ किसी भी तरह की कोई साजिश नहीं हुई होगी. क्योंकि खेल के नियम हैं. रेसलिंग में पहलवानों को अपने वजन के हिसाब से अलग-अलग वर्गों में बांटा जाता है, ताकि मुकाबला बराबरी का हो. खिलाड़ियों को अपने तयशुदा वजन वर्ग में ही खेलना होता है. अगर कोई पहलवान तय वजन सीमा में नहीं होता है तो उसे अयोग्य घोषित किया जा सकता है. यूनाइटेड वर्ल्ड रेसलिंग ही इस खेल के नियम तय करता है.

नियमों के अनुसार, हर मैच से पहले खिलाड़ियों का वजन लिया जाता है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे अपने तयशुदा वर्ग में ही खेल रहे हैं. नियम कहता है कि जो एथलीट वजन के अनुरूप नहीं होता, उसे प्रतियोगिता से बाहर कर दिया जाता है. इसके अलावा यदि कोई एथलीट पहले या दूसरे, दोनों बार में भी वजन नहीं करवाता तो भी उसे अयोग्य घोषित कर दिया जाता है. साथ ही उसे बिना कोई रैंक दिए आखिरी स्थान पर रखा जाता है. विनेश फोगाट ने संन्यास की घोषणा कर दी है. उनके मर्म को सिर्फ खिलाड़ी ही समझ सकता हैं. रियो ओलंपिक 2016 कि कांस्य पदक विजेता पहलवान साक्षी मलिक ने भी एक्स पर पोस्ट कर अपनी प्रतिक्रिया में लिखा- विनेश तुम नहीं हारी हर वो बेटी हारी है जिनके लिए तुम लड़ी और जीती. टोक्यो ओलंपिक 2020 के कांस्य पदक विजेता पहलवान पुनिया ने लिखा- विनेश आप हारी नहीं आपको हराया गया है, हमारे लिए आप सदैव विजेता रहेंगीं. जाहिर है कि इस तरह की प्रतिक्रिया से भी विनेश फोगाट के खिलाफ साजिश की ही शंका जन्म लेती है.

महावीर फोगाट की प्रतिक्रिया-मुंह पर तमाचा विनेश फोगाट के खिलाफ साजिश रचने वाला कौन है? फोगाट ने भारतीय कुश्ती महासंघ के पूर्व अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ भी यौन उत्पीड़न के आरोपों को लेकर मोर्चा खोला था. बृजभूषण शरण सिंह को भाजपा ने इस बार लोकसभा की टिकट भी नहीं दी. क्या बृजभूषण शरण सिंह ने उन्हें फायनल मुकाबले से बाहर कराने का कोई षड्यंत्र किया? खेल के नियमों को जानने वाला इसका जवाब ना में ही देगा. अपने वजन का ख्याल खिलाड़ी को खुद ही रखना होता है. लेकिन,राजनेताओं के बयान से ऐसा लग रहा है कि विनेश फोगाट के खिलाफ साजिश देश के प्रभावशाली राजनेताओं ने की. ओलंपिक से बाहर होने से पहले विनेश के ताऊ द्रोणाचार्य अवार्डी महावीर फोगाट ने कहा था, पहली फाइट में वर्ल्ड चैम्पियन युई सुसाकी को हराकर ही विनेश गोल्ड मेडल की दावेदार बन गई थी. इस बार पूरी उम्मीद है कि विनेश गोल्ड मेडल लेकर आएगी. विनेश ने जो कर के दिखाया है, यह बृजभूषण शरण सिंह के मुंह पर तमाचा है. बृजभूषण हराने के लिए पीछे लगा हुआ था, लेकिन विनेश की मेहनत रंग लाई है. देश के स्वास्थ्य मंत्री और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने रायसभा में कहा कि पूरा देश विनेश फोगाट के साथ खड़ा है. प्रधानमंत्री ने उन्हें चैंपियन ऑफ चैंपियंस कहा.

विनेश फोगाट को हरियाणा सरकार देगी सुविधाएं

हरियाणा में सितंबर के आखिरी सप्ताह में विधानसभा चुनाव की घोषणा हो जाएगी . विनेश फोगाट भी हरियाणा की ही हैं . इस कारण पेरिस ओलंपिक के पूरे घटनाक्रम की राजनीति का केंद्र हरियाणा बन गया है . हरियाणा में विधानसभा की कुल 90 सीटें हैं . 2019 के चुनाव में बीजेपी को 40 सीटें, कांग्रेस को 31 सीटें, जेपीपी को 10 सीटें मिली थी तो वहीं अन्य के खाते में 9 सीटें गई थी . फोगाट मामले में सबसे चौंकाने वाली प्रतिक्रिया हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा की थी . उन्होंने कहा कि हरियाणा में रायसभा की एक सीट खाली है . अगर मेरे पास बहुमत होता तो मैं उन्हें रायसभा में भेज देता . वहीं दीपेन्द्र हुड्डा ने कहा कि मेरी सीट विनेश को दे दो . भूपेन्द्र हुड्डा ने पूरे मामले की जांच भी कराने की मांग की है . फोगाट को मुकाबले से अयोग्य घोषित किए जाने के बाद पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान उनके गांव पहुंच गए . वे आम आदमी पार्टी की कवायद कर रहे हैं . भगवंत मान ने उपहास के अंदाज में कहा कि विज्ञापन में कहते हैं कि मोदी जी ने वॉर रुकवा दी, तो उन्होंने इसे क्यों नहीं रुकवाया, जहां हमारी बेटी के साथ बेइंसाफी हो गई . क्या रात-रात को उठकर विनेश अपना वजन खुद करेगी, या ये काम तो कोच का है . सुबह मैच से पहले क्या करना है, क्या खाना है, रात को क्या खाकर सोना है, ये सब तो उसके फिजियोथेरेपिस्ट का काम है . भारतीय कुश्ती संघ को इसका विरोध करना चाहिए था . रायसभा के सभापति जगदीप धनखड़ ने कहा, वे (विपक्ष) सोचते हैं कि केवल वे ही हैं जिनका कलेजा फट रहा है . लड़की (विनेश) की वजह से पूरा देश दर्द में है . सारे लोग इस हालात पर बात कर रहे हैं लेकिन इसे भुनाने के लिए, राजनीतिकरण करें यह उस लड़की का सबसे बड़ा अपमान है . उस लड़की को अभी बहुत लंबा रास्ता तय करना है . दूसरी और हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने घोषणा की कि विनेश फोगाट को वही सुविधाएं दी जाएंगी,जो सिल्वर मेडल विजेताओं को दी जाती हैं . इसके बाद विपक्ष से मांग उठी कि फोगाट को गोल्ड मेडल वाली सुविधाएं दी जाना चाहिए . मुख्यमंत्री सैनी का सवाल आया कि गीता-बबीता को रायसभा क्यों नहीं भेजा था?

व्यंग्य

जाति हमारी क्या पूछते हो चुन्नी...

रवि उपाध्याय
लेखक व्यंगकार और राजनीतिक समीक्षक हैं)

देश में इन दिनों यदि कोई हॉट टॉपिक है तो वह हॉट टॉपिक है, जाति. देश का विपक्ष खास तौर से सपा और कांग्रेस देश में जातीय जनगणना करवाने पर आमादा है. जातीय जनगणना नेताओं की नाक का सवाल ही नहीं बन गया है बल्कि इस गरमागरम टॉपिक ने नेताओं की नाक में दम भी कर दिया है. यह नाक का सवाल बन गया है. एक सियासी वर्ग को लगने लगा है कि यह ऐसा पारस पत्थर है जो सोना ही सोना उगलेगा.

इसी सिलसिले में हमने अपने एक मित्र से जाति को लेकर चर्चा छेड़ी तो वह और भी बड़े कलाकार निकले. उन्होंने शायराना अंदाज में हम को यह कहते हुए चारों खाने चित कर दिया कि जात हमारी क्या पूछते हो चुन्नी, शिया के सामने शिया -सुन्नी के सामने सुन्नी. राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर ने अपनी एक कविता में जातिवादियों की खाल खींचते हुए कहा है-

ऊपर सिर पर कनक छत्र, भीतर काले के काले, शरमाते हैं नहीं जगत में, जाति पूछने वाले.

वैसे स्वामी रामानंद ने इसी संदर्भ में कहा है कि जाति न पूछो साधु की पूछ ली जिए ज्ञान. अब भाई नेता से ज्ञान कैसे पूछा जाए? उसे पूछने के लिए यह आवश्यक है कि जाति पूछने वाला खुद ज्ञानवान हो, और फिर ज्ञान से कौन से महल खड़े हो सकते हैं ? नेता के समक्ष ज्ञान का मान बस एक शाल और श्रीफल से अधिक नहीं होता है. नेता और ज्ञान का रिश्ता डामर और पानी जैसा होता है. मौजूदा समय में ज्ञानी तो नेताओं के प्रशस्ति पत्र लिखने, उनके लिए नए - नए नारे गढ़ने के लिए इन नेताओं की चाकरी करते मिल जाएंगे. इसका बेहतरीन उदाहरण भारत के संविधान की रचना करने वाले डॉ. बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर थे. वे खुद ही उस लोकसभा सीट से चुनाव हार गए थे जो दलित बाहुल्य थी. उनको जिताने में उनका ज्ञान भी उनकी नैया पार नहीं लगा पाया.

अच्छे-अच्छे ज्ञानी विद्वान जुगाड़ू नेताओं की चिलम भरते नजर आ रहे हैं. एक ख्यातनाम और मशहूर मरहूम शायर ने यह राज समझ लिया और एक महान त्यागी महिला नेत्री की शान में शायरी लिख कर अजर अमर और धनवान बन गए. ऐसे कई ज्ञानी आपको सियासी दलों के घोषणा पत्र - नारे लिखते हुए मिल जाएंगे. एक और मशहूर कवि बड़े बड़े सपने और आदर्शों का गुलदस्ता लेकर नोकरशाह से नेता बने व्यक्ति की पार्टी में पहुंचे. नेता जी ने कुछ दिन तो उन्हें झेला और बाद में डिस्पोड ऑफ की फाइल में बांध दिया. वह बेचारे आज भी पब्लिकली में गाते फिर रहे हैं - अच्छा सिला दिया तूने मेरे प्यार का, यारी में लूट लिया घर यार का.

पार्लियामेंट में उस समय हंगामा हो गया जब एक नेता ने दूसरे पर ज्ञान बघारते हुए उन की जात को लेकर टोंट मार दिया. फिर क्या था दिन भर कांव कांव शुरू हो गया. अरे भाई नेताओं से कोई जाति पूछी जाती है क्या. उसमें सभी जाति समाहित होती हैं. वह तो जातियों का समंदर होता है. उसकी अपनी कोई पर्टिकुलर जाति नहीं होती. उसकी एक ही जाति है सत्ता. नेता में सभी जातियां मांस-मजा की तरह समाहित हैं. उसकी कोई जाति नहीं होती है. वह बिना जाति का है. ऐसी ही एक और गुण होता है लंपटता का. वह सब नेताओं में मांस-मजा की भांति एक समान रूप से विद्यमान होती है. उसकी डिग्री सब में अलग अलग हो सकती है. इसमें कोई सरहद आड़े नहीं आती है. नेता में यह सद्गुण सार्वभौमिक है. इसमें कोई लिंङ्ग भेद नहीं होता, किसी में कम तो किसी में यादा.होती तो सभी में है. मेरी नजर में आज तक कोई महान ज्ञानी शासक नहीं बन सका है. वह चाणक्य बन सकता है और शकुनि भी. पर शासक नहीं.

नेता में अपने को वातावरण या कहिए स्वार्थ अनुरूप ढालने की विलक्षण शक्ति होती है. वह किसी गरीब के यहां का नमक खाने के बाद भी यह जताने में देर नहीं करता कि उसने दीन हीन के यहां भोजन कर उसके जीवन को अमर बना दिया है. जब वह मीडिया में इस वृतांत को देखता, सुनता और पढ़ता है कि नेताजी ने एक दलित के यहां का नमक खा कर उसका मान बढ़ा दिया है. खबर नबीस इस वृतांत को खीसे निपोर कर सुनाता है. तब लगता है कि आज प्रजातंत्र की एक बार फिर नाक ऊंची हो गई है.

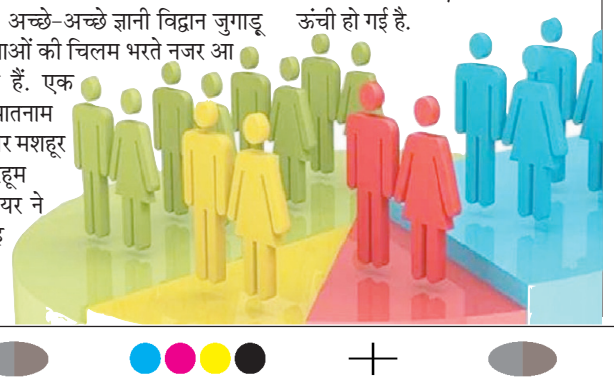

साहित्य से युवाओं का रिश्ता समय की सबसे बड़ी जरूरत है

आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

साहित्य कभी भी दुनिया की नजरों से ओझल नहीं हो सकता है. साहित्य की गरिमा और महिमा मानवता के उत्कर्ष का गौरवमय आख्यान है .मनुष्यता का पाठ हम किताबों से ही पढ़कर सीखते हैं. हमारे महापुरुषों और महान व्यक्तित्वों ने साहित्य से बहुत कुछ सीखा है. अपनी चेतना का परिष्कार किया है और समाज को भी दुर्बल मानसिकता से उबारकर युगसत्य का बोध कराया है. स्वामी विवेकानंद की जीवनकथा युवा पीढ़ी के लिए अजस्र प्रेरणास्रोत है. राम ,कृष्ण, बुद्ध,गांधी, अंबेडकर अशोक महान आदि शताधिक महान् व्यक्तित्वों पर लिखित साहित्य युवाओं के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हुआ है. हमारे समय में भारत ही नहीं विश्व समाज साहित्य की दुनिया से रू-ब-रू हो रहा है. प्रचुर मात्रा में साहित्य की रचना हो रही है.नये -नये लेखक युवाओं के मन के अनुकूल लेखन कार्य में सक्रिय हैं . चेतन भगत, आमीष त्रिपाठी आदि लेखकों का साहित्य पढ़ने में युवा पीढ़ी की अभिरुचि को रेखांकित किया गया है. समाज के बदलाव के साथ व्यक्ति की मानसिकता और व्यावहारिक प्रवृत्तियां बहुत तेजी से बदलती गई हैं. ऐसे में हमारे साहित्य और कलाओं का मिजाज बदलना स्वाभाविक है. साहित्य में नित नूतन प्रयोग होते रहे हैं. विचारों में आये परिवर्तन को भी नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है. राजनीतिक और सामाजिक परिदृश्य ने भी युवाओं के मानस को बदलने में महती भूमिका अदा की है. आज साहित्य में आये बदलाव को भी जांचना - परखना नितांत आवश्यक है. इसके साथ ही कई दुश्चिंताओं ने भी हमें घेर लिया है.मसलन साहित्य के प्रति युवा पीढ़ी का लगाव का कम होना है. इस सवाल पर लगातार बहस की पूरी गुंजाइश बनी हुई है.

मुझे लगता है कि नयी पीढ़ी का लगाव साहित्य के पठन-पाठन में लगा रहे , इसके लिए युगानुकुल लेखन की विशेष जरूरत है. यह सही है कि साहित्य के प्रति युवाओं का रुझान कम हो गया है.बहुत तेजी से बदलती हुई इस दुनिया में युवा पीढ़ी की अपेक्षाओं और भावनाओं के अनुकूल लेखन समय की महती आवश्यकता है.नया साहित्य जीवन और जगत के नये -नये प्रश्नों से जुड़ा हो, ,नये कथ्य, नये विचार , नयी भाषा और नयी शैली के चलते साहित्य के प्रति गहरा आकर्षण पैदा करना साहित्यकार से अपेक्षा की जाती है. साहित्य लेखन जमीनी हो, हमारे समय की सच्चाइयां व्यक्त हों , संकटों से पार पाने का कोई न कोई रास्ता भी नजर आना चाहिए. युवाओं के मानस की गहरी समझ के साथ साहित्य लिखा जाना आवश्यक है.पाठक नया हो या पुराना साहित्य के प्रति उसकी अभिरुचि प्राय: कम होती गई है और अन्य माध्यमों की ओर उसका आकर्षण बढ़ गया है. युवाओं में अनुभूति पक्ष दुर्बल हुआ है. मन की एकाग्रता भी भंग हुई है.आज हम डिजिटल समय में जी रहे हैं .डिजिटल मीडिया, सोशल प्लेटफार्म , आनलाइन कंटेंट की ओर युवाओं का झुकाव बढ़ा है.मोबाइल ने युवा पीढ़ी को जरूरत से ज्यादा अपने कंटेंट के प्रति आकृष्ट किया है. नये -नये विषय, विचार, दृश्य, कथा, घटनाएं, शैली तथा अन्य आकर्षण में युवा पूरी तरह से इंवाल्व होता गया है. भरपूर मनोरंजन भी उसे मोबाइल तथा अन्य साधनों से मिल जाता है. ज्ञान और मनोरंजन के आधुनिक संसाधनों के कारण युवा पीढ़ी की अभिरुचि बहुत तेजी से बदलती गई है पठन की आदत क्षीण होती गई है. दृश्य और श्रव्य माध्यम से प्राप्त ज्ञान सामग्री सहज रूप में पाकर युवा साहित्य से उसका ध्यान हटता गया है. वीडियो, मूवी, गेम्स ने साहित्य का स्थान बहुत आसानी से ले लिया है.

स्त्री पुरुष, युवा, बच्चे सभी की इच्छाओं, दुर्बलताओं , भावनाओं के अनुरूप ढेरों बातें, प्रसंग, दृश्य यानी मनोरंजन और ज्ञान की पर्याप्त सामग्री मोबाइल के तमाम स्रोतों से प्राप्त हो जाती है . उसे पुस्तकालय में किताबें खोजने की जरूरत नहीं रह गई है. ई बुक, ई मैगज़ीन, ई कंटेंट के रूप में घर बैठे अधिकांश साहित्य गूगल पर उपलब्ध हो जाता है. साहित्य पढ़ने और लिखने का सबसे सहज साधन मोबाइल और लैपटॉप हो गया है. अभिव्यक्ति का सबसे सुगम साधन भी मोबाइल है.नित नये -नये लेखक हमारे सामने आ रहे हैं. उनकी सृजनधर्मिता के उभार का जबरदस्त प्लेटफार्म मोबाइल पर यूट्यूब , फेसबुक, ट्विटर , वाट्स अप, गूगल आदि के माध्यम से उपलब्ध है . कक्षा में बैठा विद्यार्थी और अध्यापक भी मोबाइल पर उपलब्ध आधार सामग्री को उलट-पुलट कर अपना काम चलाना चाहता है. अपनी विद्वत्ता प्रदर्शन उसके लिए बायें हाथ का खेल हो गया है. आज किताबें धीरे-धीरे उसके हाथ से,बैग से , पुस्तकों के रैक से घटती गई हैं.पढ़ने की अभिरुचि कमतर हो गई है. उसकी उमंगों, उसकी नव्यतम इच्छाओं, बौद्धिक क्षमता के अनुरूप साहित्य यदि लिखा नहीं जायेगा तो पुस्तकें पढ़ने की प्रवृत्ति का नुक़सान होगा.

सुरक्षा का आधार! फिर आदेश स्वेच्छिक होकर विकल्प क्यों?

(गतांक से आगे)

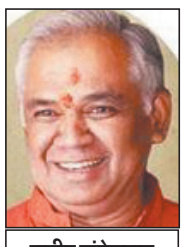

राजीव खंडेलवाल
(लेखक वरिष्ठ कर सलाहकार एवं पूर्व सुधार न्यास अध्यक्ष हैं)

पूर्व में घटित जिन घटनाओं को आधार बताते हुए सुरक्षा हेतु जो निर्देश दिए गए हैं, उनका पालन स्वेच्छा से है. यह अपने आप में ही परस्पर विरोधास्पदी है. क्योंकि सुरक्षा के मामले में विकल्प नहीं दिया जा सकता है. राष्ट्र हो या व्यक्ति, सुरक्षा के साथ कोई समझौता अथवा विकल्प नहीं दिया जा सकता है. चूंकि उक्त आदेश सुरक्षा की दृष्टि से जारी किया गया है, अत: आप उसमें ''विकल्प'' देकर वास्तव में सुरक्षा के प्रश्न को ही ''गौड़'' बना दे रहे हैं.

यदि आदेश सही है, तो सुरक्षा की दृष्टि से मानने की बाध्यता होने ही चाहिये. मीडिया में रिपोर्टिंग आई है, कई जगह नाम लिखाने में जोर जबरदस्ती में पुलिस की सक्रिय भूमिका रही है. तथापि कुछ व्यवसाइयों ने स्वेच्छा से इसे स्वीकार कर लागू भी किया है. वहीं एक जगह तो कावड़ रास्ते में आने वाली मस्जिद को भी कपड़े से ढ़का गया है, जहाँ पुलिस मूक हो जाती है, फिर हटाते हुए भी दिखाया गया है. यद्यपि पिछले साल मालदा पश्चिम बंगाल में भी मंदिर के सामने से मोहर्रम जुलुस जाते समय मंदिर को ढ़क दिया गया. मध्य प्रदेश के शिवपुरी में भी पिछले समय ऐसी ही घटना हुई. कुछ जगह मुस्लिम मालिकों की शुद्ध शाकाहारी भोजनालय से मुस्लिम नौकरों को भी हटाया है. नैनीताल में अन्नपूर्णा होटल का मालिक आबिद हुसैन के यहां काम करने वाले समस्त हिन्दु हैं. योगी सरकार में इस तरह की कोई घटना नहीं हुई है, जैसा की दावा किया जाता है. जो इस बात को सिद्ध करती है कि प्रशासनिक आदेश के लिए उक्त घटना का आधार लेना बिल्कुल गलत है. क्योंकि कावड़ यात्रा तो हर साल चलती ही है.

पूर्व से ही विद्यमान उक्त आदेश/निर्देश! तथ्योंपरक नहीं

उच्चतम न्यायालय में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा दाखिले गए शपथ पत्र में यह कहा है कि इसका उद्देश्य मात्र यह है कि कांवड़ियों को यह पता लग सके कि वे कौन सा भोजन ले रहे हैं. ताकि भूल से भी उनकी धार्मिक भावनाओं को ठेस न पहुंचे. खाने में ''प्याज-लहसुन'' का उपयोग झगड़ा तनाव पैदा कर सकता है. उक्त आदेश सिर्फ 5 अगस्त तक ही लागू है.

यूपी सरकार, मंत्री ओमप्रकाश राजभर, भाजपा नेताओं व प्रवक्ता शाईना एनसी ने जहां उक्त कदम को सही ठहराया है वही एनडीए के तीन घटकों जेडीयू, लोक जनशक्ति पार्टी व आरएलडी ने विरोध करते हुए इसकी समीक्षा/वापस लेने की मांग की है. सुखद व आश्चर्यजनक समर्थन ऑल इंडिया मुस्लिम जमात के राष्ट्रीय अध्यक्ष शहाबुद्दीन रजवी बरेलवी की ओर से आया है, जो धार्मिक सहिष्णुता व उदारता का बड़ा परिचायक है. राज्य भाजपा प्रवक्ता राकेश तिवारी का यह कहना है कि ''सरकार ने तो बस वही दोहराया है, जो वर्ष 2006 में मुलायम सिंह यादव सरकार व तत्पश्चात मायावती सरकार द्वारा अधिसूचित किया गया था''.

यह दावा किया गया है कि वस्तुत: मुलायम सिंह की सरकार के समय रेस्ता, ढ़ाबा संचालक को फर्म का नाम व लाइसेंस संख्या लिखने के आदेश जारी किये गये जो ''तथ्योंपरक'' न होकर ''भ्रामक'' है. वस्तुत: खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम 2006 की धारा 3 (ण) के अंतर्गत परिभाषित ''व्यापारी'' को अधिनियम के अंतर्गत लाइसेंस लेना होता है, जो प्रारूप 'सी' में जारी होता है, जिसे दुकान की सार्वजनिक जगह पर प्रदर्शित करना (अनिवार्य) होता है. फार्म ''सी'' में अनुज्ञपति धारी (लाइसेंसी) के पंजीकृत कार्यालय के नाम पता लिखना होता है. मालिक या संचालक का नाम नहीं. तथापि लाइसेंस के गैर फार्म सी अनुलग्नक (ऐनेकजर) में ''संचालन का प्रभारी तथा जिम्मेदार व्यक्ति की'' जानकारी जरूर देनी होती है. तथापि सार्वजनिक जगह पर वह ''ऐनेक्जर'' प्रदर्शित नहीं होता है, जैसे फार्म 'सी'. केन्द्रीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम 2006 में इस तरह के कोई निर्देश नहीं है कि दुकानदार अपना नाम पृथक से लिखें/प्रर्दशित करे. तर्क के लिए जब इस तरह के आदेश/नियम पूर्व से ही थे? तब अभी नये निर्देश जारी करके क्या उत्पाती तत्वों को अनावश्यक रूप से साम्प्रदायिक व धार्मिक-विभेद को पैदा करने का अवसर नहीं दिया गया? पूर्व के नियमों का पालन यदि नहीं हो रहा है, तो निर्देशों में उक्त नियमों का हवाला देते हुए कड़ाई से पालन की चेतावनी दी जानी चाहिए थी, नया आदेश/निर्देश नहीं?